अध्याय 3

पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का अध्ययन एवं विश्लेषण

अध्याय - 3
पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का अध्ययन एवं विश्लेषण

पत्रकारिता अपनी बहुमुखी प्रवृत्तियों के कारण समग्र मानव–जीवन को गहराई से प्रभावित करती है। पत्रकारिता देश की जनता की चित्तवृत्तियों, अनुभूतियों और आत्मा से साक्षात्कार करती हुई मानव मात्र को 'जीने की कला' सिखाती है। सत्य की खोज में रत रहते हुए समाज में उदात्त मूल्यों की स्थापना की दिशा में पत्रकारिता की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पत्रकारिता विविध आयामी है और राष्ट्रीय, लोकतांत्रिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापिका है। अर्थात् पत्रकारिता नित्य परिवर्तित होते सामाजिक कार्यकलापों का संकलन एवं प्रस्तुतिकरण मात्र नहीं है, यह मानवीय अनुभूतियों एवं अमूर्त भावनाओं को संप्रेषित करने का विश्वसनीय लोकप्रिय जनमाध्यम है। राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों से संदर्भित सत्कार्य ही पत्रकारिता हैं।

1. पत्रकारिता और मानवीय मूल्य :

मानवीय जीवन के विविध क्षेत्रों की जानकारी देने वाली पत्रकारिता लोगों को राष्ट्र से और राष्ट्र को लोगों से जोड़ती है। पत्रकारिता मानवीय मूल्यों को शाश्वत प्रदान कर शेष मूल्यों का परिवर्तित रूप में ग्राह्य,

नियंत्रित एवं लोकमंगलकारी बनाती है। पत्रकारिता मानव जीवन के भौतिक, आत्मिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष के साथ मूल्यगत परिपक्वता का मार्ग प्रशस्त करती है। मूल्य मनुष्य को अपने जीवन, अपने पर्यावरण, अपने आप से समाज और संस्कृति से ही नहीं, अपितु मानव–अस्तित्व व अनुभव से प्राप्त होते हैं।

मूल्य परिवार, समाज, संस्कृति, धर्म, अध्यात्म, राजनीति एवं अर्थ के साथ शिक्षा से सम्बद्ध होते हैं। इन मूल्यों का समवेत रूप जीवन मूल्य कहलाता है। जीवन मूल्यों का अस्तित्व पर्यावरण, सामाजिक एवं वैज्ञानिक परिवर्तन पर अवलंबित है। सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्य युग–सापेक्ष हो सकते हैं; आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक मूल्य भी सत्ता–सापेक्ष हो सकते हैं, किन्तु मानवीय मूल्यों में शाश्वतता होती है।

समता, न्याय, सहकर्म एवं सहयोग युग एवं सत्ता सापेक्ष मूल्यों के प्राणतत्व है पर मानवीय मूल्यों की आत्मा संवेदनाधारित व्यावहारिकता एवं अर्न्तसम्बन्ध की आत्मीयता है जो अमूर्त है, अनुभवगम्य है। अनन्त शाश्वत व सार्वभौम मूल्य अपनी अनिवार्यता को उस लोकातीतत्व से प्राप्त करता है जोकि मूल्यों के संस्तरणात्मक और विकासात्मक व्यवस्था को निर्देशित एवं नियंत्रित करता है।

ऐसे मूल्य अमूर्त एवं आदर्शात्मक होते है जिनका सार आनंद है। समाज के नियंत्रण का अनुमोदन के माध्यम से समस्त मानवीय अभिप्रेरणाएँ मूल्यों में रूपांतरित हो जाती है।

समाज आधारभूत प्रेरणाओं सहित समस्त प्रेरणाओं को न केवल ढालता है, अपितु उनकी अभिव्यक्ति एवं परितृप्ति के साधनों को साहित्य एवं पत्रकारिता के माध्यम से निश्चित करता है।

''मानवीय मूल्य मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों का द्योतक या प्रतिरूपक है।''

(पत्रकारिता और मूल्य, रमेश शंकर, पृ.सं. ३१)

आधारभूत मानवीय मूल्यों की परितृप्ति हो जाने पर खिन्नता या उदासीनता पनपती है अथवा पसंद परिवार में परिवर्तित हो जाती है। उस अवस्था में समाज और सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से पत्रकारिता मनुष्य के लिए नवीन इच्छाओं, नवीन लक्ष्यों तथा नवीन साधनों को प्रस्तुत करते हैं जिसके कारण नवीन मूल्य पनपते है और मानवीय मूल्य संजीवन प्राप्त करते हैं।

व्यक्ति के व्यवहार–प्रतिमान में कई मूल्यों का सम्मिलन, कभी संतुलित रूप में तो कभी असंतुलित रूप में देखने को मिलता है, परन्तु मानवीय मूल्य आवेग संबंधित होकर अपरिवर्तित रहते हैं। मूल्यों में परस्पर प्रतिस्पर्द्धा चलती रहती है। मूल्यों के इस निरन्तर टकराव के बीच मनुष्य तथा समाज मूल्यों के एक संस्तरण को विकसित कर लेते हैं जिसके अन्तर्गत साध्य मूल्यों को साधन मूल्यों से उच्च स्तर प्रदान किया जाता है।

''पत्रकारिता'' मानवीय मूल्यों का प्रतिष्ठापक है। अनेक मूल्य एक दूसरे के साथ संघर्ष करते रहते हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपनी शिक्षा एवं अनुभव के आधार पर, संस्थाओं, सामाजिक आदर्श–नियमों द्वारा निर्देशित होकर उपयुक्त मूल्यों को चुनता है। मूल्य के पारस्परिक संघर्ष के कारण व्यक्ति कार्य–विधियों के विकल्प को ढूँढ़ता है जिसके परिणामस्वरूप मूल्यों का विवेकपूर्ण प्रतिपादन होता है।

यह विवेक साहित्य की पत्रकारिता से मनुष्य को प्राप्त होता है जो मूल्यों के मूल्यांकन पुनर्मूल्यांकन का कार्य संपादित करती है। समाज या संस्कृति मनुष्य को मूल्यों के आधारभूत प्रतिमान प्रदान करती है। समस्त मानवीय इच्छाएँ सामाजिक आवेगों के साथ संपृक्त रहती है। मानवीय मूल्य ही एक साधन है जो मनुष्य के सामाजिक संबन्धों का द्योतक है।

मनुष्य के विवेक तथा निर्णय एवं समाज का अनुभव मूल्यों के एक सोपान या अधिमानों का निर्माण करते हैं जो कि मूल्यों के चुनाव की एक छलनी का कार्य करता है और उत्तम एवं अधम, स्वतः साधन मूल्यों के बीच भेद करता है। मूल्यों का एक नियम यह भी है कि इनमें वैयक्तिकता, विभिन्नता तथा अनुपमता देखने को मिलती है।

अपनी अभिरुचियाँ, आदतों तथा क्षमताओं में विविधताओं के कारण मनुष्य मूल्यों की संतुष्टि अपने–अपने वैयक्तिक ढंग से अलग रूप से करता है। पत्रकारिता वैयक्तिकता, विभिन्नता और संकीर्णता को नियंत्रित कर

समष्टि चेतना को मानवीय मूल्यों से संपृक्त करती है। मानवीय मूल्यों में गुणात्मक सुधार सामाजिक पर्यावरण में, मनुष्य का समूह तथा संस्थागत सम्बन्धों और अनुभव की सामाजिक परिस्थिति में ही घटित होता है। जैसे–जैसे समूह साहचर्य और एकात्मकता में उन्नति करते हुए स्वार्थ सयमिति से समाज और सामूहिकता की ओर आगे बढ़ता जाता है वैसे मानवीय मूल्य भी अधिकाधिक संपूर्ण, आत्मनिर्भर तथा स्थायी होते जाते हैं।

''मानवीय मूल्यों का जीवन दर्शन है पत्रकारिता''

(www.webdunia.com)

2. आज के युग में मानवीयता की आवश्यकता एवं महत्ता :

आज के युग में मानवीयता, मानवीय मूल्यों और मानवीय अधिकारों की बात हर ओर सुनाई दे रही है परन्तु क्या आज के आदमी के सामने ऐसे मानवीयता या मानवीय मूल्य और आदर्श है जिनके सहारे वह अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर सके और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ कार्यरत हो सके?

आदर्श मानव मूल्य क्या हैं? ये वे मूल्य हैं–जो मनुष्य को उच्चतर जीवन की ओर ले जाते हैं। श्रेष्ठतर और उच्चतर जीवन जीने की कल्पना हर बुद्धिमान व्यक्ति के मन में होती है। यह आवश्यक है कि श्रेष्ठतर और उच्चतर जीवनादर्श ऐसे तकपूर्ण हो कि मनुष्य का विवेक उन्हें स्वीकार करे और

उस समय के श्रेष्ठ और अग्रगण्य व्यक्ति उन्हें अनुकरणीय मानकर व्यक्तिगत जीवन में उनसे प्रेरणा लेते हों।

ऐसे आदर्श मानव मूल्य जीवन का लक्ष्य और दिशा निर्धारित करते हैं और मनुष्य अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा का प्रयोग करके उस लक्ष्य को पाने का प्रयत्न करता है। उस लक्ष्य तक पहुँचकर वह परम तृप्ति और सन्तोष का अनुभव करता है।

लक्ष्य के अभाव में जीवन दियाहीन और निरर्थक हो जाता है जिससे जीवन में बैचेनी और असन्तोष व्यास हो जाता है। बैचेनी और असन्तोष से छुटकारा पाने के लिए एवं अन्य समस्याओं का एक ही सुझाव है – पत्रकारिता। पत्रकारिता ही एक ऐसा क्षेत्र है जो जनता में मानवतावाद का पाठ पूर्ण रूप से सिखाता और समझाता है।

मानवतावाद में ईश्वरीय सत्ता तथा पारलौकिक चिंतन को छोड़कर टूटते–जूझते मानव के संघर्षों को महत्व दिया जाता है। प्रत्येक समूह, प्रत्येक संस्था व्यक्ति के आवेगों तथा स्वार्थों के एक स्थायी संगठन का प्रतिनिधित्व करते हैं और इस प्रकार एक नए मूल्य को प्राप्त कर लेते हैं। इसके सहारे व्यक्ति एक उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है और एक आदर्श तक पहुँच जाता है।

पत्रकारिता नए मूल्यों को निर्धारित नियंत्रित करती है और आदर्शों का दिशा निर्देश करती है। मनुष्य के आदर्श मूल्यों, मानवीयता, बौद्धिक, कलात्मक एवं साहित्यिक अर्न्तदृष्टि और परानुभूति में आनंद निहित होता है। मनुष्य का आदर्श मूल्य, सत्य के सम्बन्ध में उसकी अर्न्तदृष्टि, सौंदर्यदायक और धार्मिक चेतना उसका व्यावहारिक आविष्कार तथा प्रयोगवाद नियंत्रण व मानवतावाद ही वह स्त्रोत है जो वैयक्तिक जीवनों को अपने घेरे में ले लेती है।

इस प्रकार मानवीय मूल्यों तथा मानवीयता का जीवन दर्शन है 'पत्रकारिता'। इसका उद्देश्य मात्र समाचार का सम्प्रेषण करना ही नहीं, वरन् मनुष्यता के प्रति सच्ची तड़प पैदा करना है। यह मानवीयता की चेतना को प्रबुद्ध और जागरूक करती है, उसके अधिकार एवं कर्तव्य का बोध कराती है, इसलिए इसका दायित्व मंगलकारी है।

पत्रकारिता लोकतंत्र का चतुर्थ आधार स्तंभ है; क्योंकि संपूर्ण मूल्यों का संरक्षण एवं मानवीयता की भावना को जनता में स्थापित करने का कार्य यही करती है। पत्रकारिता देश की जनता की चित्तवृत्तियों, अनुभूतियों और आत्मा से साक्षात्कार करती हुई मानव मात्र को 'जीने की कला' सिखाती है। सत्य की खोज में रत रहते हुए समाज में उदात्त मानवीयता की स्थापना की दिशा में पत्रकारिता की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

समग्र रूप में पत्रकारिता के आदर्श को इन तीन भागों में समाहित किया जा सकता हैः–

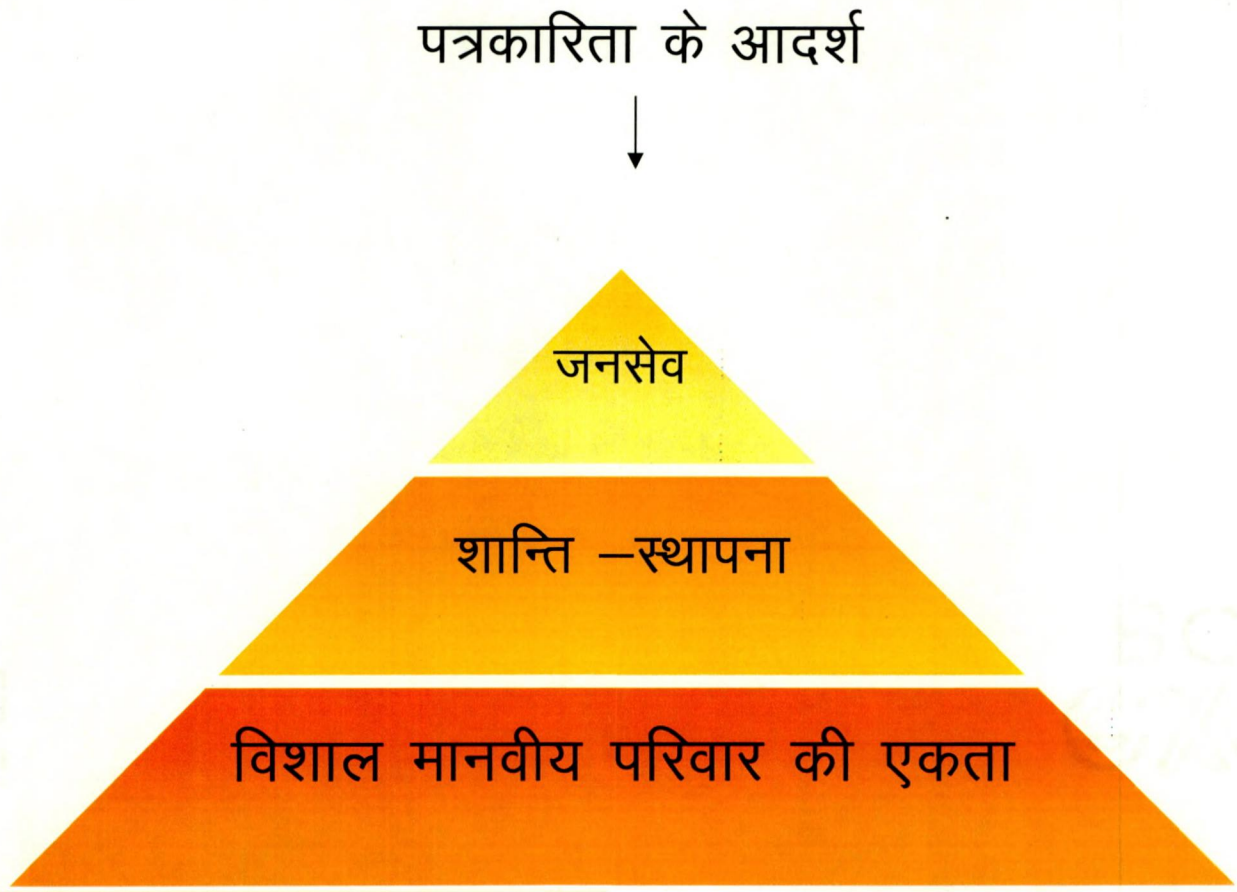

ये उद्देश्य अपने में इतने पूर्ण हैं कि इनमें मानवीय कल्याण की सभी बातें सामाजिक सुधार से लेकर जनता में मानवीय मूल्यों की स्थापना तक आ जाती है। एक व्यावसायिक विधा होने के नाते पत्रकारिता का उद्देश्य मानव सभ्यता का उत्तरोत्तर विकास है।

यह तभी संभव है जब मानवीय गुणों का पोषण हो। इसके साथ–साथ पत्रकारिता अपने व्यावसायिक विस्तार और लोकप्रियता को प्राप्त

करने के लिए ऐसे आदर्श वाक्यों का चयन करता है जिनमें मानवीय गुणों की अभिव्यक्ति होती है।

अर्थात् आधुनिक पत्रकारिता केवल समाचारों का संकलन अथवा प्रचार का माध्यम ही नहीं है, वह जनमत की संरक्षक, सर्जक, मानवीय मूल्यों का पोषक और समाज का पथ–प्रदर्शक है। उसके साथ–साथ पत्रकारिता का ओर एक प्रमुख उद्देश्य होता है समाज में मानवतावादी चिन्तन के भाव को जनता में भर देना। इसी कारण समाज के निर्माण और मार्गदर्शन के साथ–साथ मानवीयता की स्थापना करना आवश्यक सिद्ध होता है।

3. मानव, मानवता एवं पत्रकारिता :

मानवतावाद में पारलौकिक चिंतन को छोड़कर टूटते–जूझते मानव के संघर्षों, आकांक्षाओं और द्वन्द्वों का महत्व दिया जाता है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार मानवतावाद का अर्थ है – **''चिंतन की वह पद्धति जो मूलतः मानव को और उसकी शक्ति–सामर्थ्य, जीवन–व्यापारों, ऐहिक महत्वाकांक्षाओं और उनके कल्याण को महत्व प्रदान करती है।''**

यूरोपीय पुनर्जागरण में मानव जीवन की सार्थकता, शक्ति और महानता को सर्वोपरि महत्व दिया गया। अतः रेनेसाँ का मूलाधार मानवीय कार्यकलाप और संदर्भ थे। राष्ट्रीय नवजागरण के साथ ही मानवतावादी चिंतन का आगमन हुआ। बंगला के मूर्धन्य साहित्यकार शरत के अनुसार

"कोई भी शास्त्र, श्लोक, मंत्र और तंत्र मनुष्य से बड़ा पहीं है।" हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के लेखों तथा अन्य रचनात्मक विधाओं में भी मानवता चिंतन, अनुभूतियों और संदर्भों को लेकर समझने–समझाने की चेष्टा की गई।

उनकी हर भंगिमा मानवीय जीवन को प्रतिबिंबित करती है, मानव के संघर्ष और दर्द को उकेरती है। ये पत्रिकाएँ ईश्वरीय सत्ता को भी मानवीय निकष पर प्रस्तुत कर मानव की महत्ता उद्‌घाटित करती हैं, **"जिस कसौटी, परिभाषा और सूत्र के अनुसार हम लोग आपस में एक दूसरे को जाँचते–परखते है यदि वहाँ भी लगाय उसे परखे तो ईश्वरता की सब कलई खुल जाय।"** तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं ने पराधीन जनता को मानवतावाद का पाठ सिखाया है।

मानव की प्रवृत्ति सत्य, रज तथा तम, इन तीन गुणों या अवस्थाओं की सम्मिश्रण होती है। ये तीनों ही गुण या प्रवृत्तियाँ हर व्यक्ति की प्रकृति में पायी जाती है किन्तु किसी व्यक्ति में सात्विक वृति–प्रधान होती है तो किसी में राजसी वृत्ति तथा किसी अन्य व्यक्ति में तामसी वृत्ति ही। इन गुणों की अपनी पृथक विशेषताएँ भी होती है और उन्हीं विशेषताओं के कारण मानव एक–दूसरे से भिन्न होता है तथा उसका अपना पृथक व्यक्तित्व भी बनता है।

पत्रकारिता मानव–निर्मित ही एक कला है और उस पर मानव के स्वभाव या प्रवृत्ति का प्रभाव पड़ना भी स्वाभाविक है। वस्तुतः मानव–स्वभाव

में भेद का ही परिणाम है कि पत्रकारिता की अलग–अलग प्रवृत्तियों का निर्माण हो गया है। मानव की गति समय के साथ चलती है। उसका स्वभाव है कि वह अपना व्यक्तित्व अलग रखे तथा दूसरों को उसी रूप में वह प्रभावित भी करता है।

जब मानव–मानव में यह स्वतन्त्र भाव प्रबल हो जाता है तब यह संकट व संघर्ष का रूप भी ले लेता है। इस संघर्ष के परिणाम समाज के लिए अच्छे भी होते है और बुरे भी। उस समय पत्रकारिता ही एक शक्ति थी जो इन स्थितियों तथा विचारों में संघर्ष के फलस्वरूप एकता, निर्भयता और अहिंसा जैसे गुणों को समाज में लाने की कोशिश किया। पत्रकारिता समाज और उसकी प्रवृत्तियों के साथ चलती है।

उसमें वह मानवीय भावनाओं, मानवता तथा नए मूल्यों का निरन्तर परिष्कार तथा संस्कार का प्रयास करती रहती है। तत्कालीन पत्रकारिता आधुनिकता की विसंगति से अछूती रहकर भी अपनी प्रगतिशीलता, यथार्थपरक दृष्टिकोण, मानवतावादी प्रतिबद्धता में नितान्त आधुनिक है। अतः आधुनिक मानवतावादी चिंतन तत्कालीन पत्रकारिता में रूपों में अवतरित हुआ था।

साधारण मानव के सुख–दुख, आशा–आकांक्षा की अभिव्यक्ति, लोक–मंगल का विधान, बहुमुखी मानवीय व्यक्तित्व को प्रधानता, नारी–अछूत

को समानाधिकार देना तथा मानव की सांसारिक प्रगति को जीवन का आवश्यक अंग मानना इसके प्रमुख लक्ष्य है।

4. पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का स्थान :

पत्रकारिता वस्तुतः **"जनता"** की अभिव्यक्ति है। अतः उसे जनकल्याण तथा जन विचारधारा का प्रतिनिधि बनना होगा। मानव को सशक्त बनाने, निराश और थके–माँदे जीवन में उत्साह तथा विश्वास का सम्बल प्रदान करने में पत्रकारिता का बड़ा हाथ हैं। आज पत्रकारिता सूचनाओं और समाचारों का संकलन मात्र न होकर मानव जीवन के व्यापक परिदृश्य को अपने में समेटे हुए हैं।

पत्रकारिता समाज को केवल दिशा–निर्देश ही नहीं करती बल्कि समाज में मानवीय मूल्यों का पोषण एवं पल्लवन करती है। पत्रकारिता मानवीय मूल्यों को जीवित रखते हुए उन्हें विरासत के रूप में अगली पीढ़ी तक पहुँचाने में भी अहम् भूमिका निभाती है। कुछ विद्वानों ने पत्रकारिता को **"मूल्यों की प्रहरी"** की संज्ञा भी दी है। पत्रकारिता ने मानवीय मूल्यों के साथ–साथ नए मूल्यों की स्थापना की है जो मानव को और भी अधिक श्रेष्ठ बनाने में सहायता करती है।

पत्रकारिता से ही मनुष्य अपने जीवन मूल्यों से परिचित होता है। अतः इसे समाज में पहुँचाने का कार्य भी पत्रकारिता का है। अंधी परंपराओं के उन्मूलन, जाति और लिंग संबंधी मानवीय अंतर को पाटने तथा नए मूल्यों

की स्थापना करने में पत्रकारिता के व्यावहारिक रुख की काफी महत्ता रही हैं। पत्रकारिता के माध्यम से प्रत्येक मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन–पद्धति का निर्माण करता है।

मानवी मूल्य में प्रत्येक मनुष्य की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था आदि समेकित है। पत्रकारिता, मानवीय मूल्यों को समाज के हर कोने–कोने तक पहुँचाने की कोशिश कर रही है जिससे वह ''बहुजनहित'' या ''सर्वजनहित'' जैसे मूल्यों को समाज में ला सके।

पत्रकारिता मानवीय मूल्यों को समाज में विकसित करती हुई जन–जीवन, अंधी–परंपराओं, जैसे अन्य विचारों को बदलकर नई दिशा बदलने का प्रयास कर रही है। ताकि मनुष्य के विचारों में नवीनता आए और वह प्रगतिशील ढंग से सोचने को बाध्य करे।

पत्रकारिता समाज को अनेक मूल्यों से परिचित कराती है जिसके कारण मूल्यों के बीच संघर्ष होता है अर्थात मनुष्य अपनी–अपनी योग्यताओं एवं अनुभव के सहारे अपने लिए आदर्श–नियमों को चुनता हैं। अतः पत्रकारिता मानवीय संबंधों को जगाने का दायित्व निभाती है और पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों का स्थान अद्वितीय है।

5. वर्तमान काल में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता :

पत्रकारिता के क्षेत्र में मानवीय व्यवहार में मूल्य शब्द का अर्थ है सहज जीवन, शुद्ध आचरण, आत्मसंयम, आत्मशुद्धि के अर्थ में प्रयोग किया गया है। लोक–मंगल और लोक कल्याण की भावना भी मानवीय गुणों से ही सन्निहित है जो मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। पत्रकारिता में मूल्य शब्द का सम्बन्ध न केवल आध्यात्मिकता से है बल्कि सत्य, अहिंसा, शुद्धता, अच्छाई एवं सौन्दर्य से भी है।

तात्पर्य यह कि यथार्थवादी विचारधारा में मूल्य का सम्बन्ध सत्य और अहिंसा तथा मानवीय सदकर्मों से है। इसलिए पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों की पहचान और परख काफी विचारणीय बिन्दु है। पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों की पहचान विषयीपरक तथा साथ ही परिस्थितिनुकूल है। इस प्रकार पत्रकारिता में मूल्य की पहचान और समीक्षा करने पर विषय के संदर्भ में ज्ञान ही उसकी मुख्य पृष्ठभूमि है।

ज्ञान जी उसका मूल आधार है, ज्ञान ही विषय और विषयी का तादात्म्य कराता है तथा उसको विविध आयामों में प्रकट करता हैं। आज की पत्रकारिता सुविधाभोग एवं सत्तासुख की प्राप्ति का व्यापार प्रतीत होती है। इसमें मूल्यगत गिरावट स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। उद्योगपति, शासन, प्रशासन, अधिकरण एवं उपक्रम के परितः परिक्रमा ही इसका धर्म है।

मूल्यगत हनास के परिणामस्वरूप आज के अधिकांश पत्र और पत्रिकाएँ विकृत मानसिकता वाली घटनाओं को अतिशयोक्ति पूर्ण फलक

प्रदान करते हैं। अपराध, बलात्कार एवं हत्या, क्षेत्रीयता, जातीय समीकरण, साम्प्रदायिकता को अर्थवत्ता प्रदान करने का उपक्रम प्रसारण द्वारा पत्रकारिता अर्थोपार्जन के लिए क्रय–विक्रय का व्यापार है।

पत्रकारिता का अपराधीकरण, वादीकरण और राजनीतिकरण मूल्यों के ह्रास का ही दुष्परिणाम है। पत्रकारिता की विश्वसनीयता के लिए मूल्यों को पुनर्जीवित करना अपरिहार्य है। व्यावहार्यता, दक्षता, सर्वग्राह्यता, सह अस्तित्वात्मक पहचान मूल्यों के सार हैं और पत्रकारिता की संजीवनी शक्ति भी। कथ्य को सत्य, तथ्य एवं मूल्य से संपृक्त कर प्रस्तुत करना ही पत्रकारिता का धर्म है।

लोकतांत्रिक मूल्य भी मानवीय मूल्यों से ही संबल प्राप्त करते हैं। परम्परा प्रगति एवं समृद्धि का तब अवरोधक बन जाती है जब मूल्यहीन होती है। पत्रकारिता मूल्यगत परम्परा को प्रस्तुत कर विद्यार्थी, निराला, जोगलेकर उत्पन्न करती है।

पत्रकारिता में मानव मूल्यों को जिस प्रकार का स्थान समाज में दिया जा रहा है वह बहुत ही श्रेष्ठ सिद्ध होता है। मानव में आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति की प्रेरणा दी वह मनुष्य में पूर्णता प्राप्ति की महत्वपूर्ण विशेषता है। मानवीय भावना युक्त समाज ही पत्रकारिता का आधार है।

मानव मूल्यों से युक्त पत्रकारिता ही आज के समाज की मुख्य आवश्यकता है। जिसकी सुन्दरता स्वयंमेव व्यक्ति के सीमित, असुन्दर व

छोटे स्वरूप को असीम, सुन्दरतम और महिमामय बनाकर उसको समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष:

पत्रकारिता मानव समाज के बहुत करीबी रिशता रखती है। पत्रकारिता मानव–समाज द्वारा स्वीकृत रचना–कर्म है। पत्रकारिता समाज की वह सीढ़ी है जो समाज को सच्च–झूठ, शुभ–अशुभ और अच्छे–बुरे के दरवाजे तक पहुँचाती है। पत्रकारिता आज के जगत का एक ऐसा अनिवार्य तत्व है, जो मानवीय संबंधों को जगाने तथा मानवीय मूल्यों का पोषण एवं पल्लवन करने का दायित्व निभाती रहती है। जो मानव और पत्रकारिता और भी करीब रखता है।

पत्रकारिता ही एक मार्ग है जो समाज को बदलने में सम्यक मानवीय मूल्यों का समायोजना करती है। अर्थात् पत्रकारिता विघटित जीवन मूल्यों की स्थिति में नए मूल्यों की स्थापना में सहायक सिद्ध होते हैं। मानवीय मूल्य, पत्रकारिता की सच्ची परिचायिका और प्रेरक हैं।

''मानवीय भावना युक्त समाज की पत्रकारिता का आधार स्तम्भ है।''

(www.raftar.com)